- Research Papers Published in Peer-Reviewed Journals/ Proceeding & Other

	Name of Faculty	Dr. Saroj Patil
	Name of Department	Hindi
	Academic Year	2023-24

Sr. No.	Name of Research Papers Book/Edited Book/ Chapter	Name of the Peer-Reviewed Journal and Publication	Page No
1.	सामाजिक उत्तरदायित्व से बेखबर कार्पोरेट जगत	Vidyawarta, Peer-Reviewed International Journal ISSN : 2319 9318 Special – Issue Jan.to Mar. 2024	159 to 162
2.	आजाद भारत की आर्थिक विषमता और जनवादी कवि 'धूमिल'	B.Aadhar single Bind Peer-Reviewed International & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal ISSN : 2278- 9308 March- 2024	273 to 276
3.	निर्मला पुतुल लिखित 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का सामजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश	Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ) Peer-Reviewed And Indexed Journal ISSN : 2349-638	170 to 173

आपले सर्व पेपेर्सची माहिती वरील नमुन्यात भरून आपले पेपेर्स pdf मध्ये जोडावेत

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Shri Shahu Chhatrapati Shikshan Sanstha's

SHRI SHAHAJI CHHATRAPATI MAHAVIDYALAYA

Accredited by NAAC with Grade 'A' (CGPA-3.13)
2968, 'C' Ward, Dasara Chowk, Kolhapur- 4169002 (M.S.)
Phone : (0231)-2644204, Fax : 90231)-2641954
Affiliated to : Shivaji University, Kolhapur- 416004 (M.S.)

ONE DAY INTERDISCIPLINARY NATIONAL SEMINAR
ON
Sustainable Development in India: Strategies & Emerging Trends in Businesses

Saturday 16th March 2024

Organized by
Department of Commerce & IQAC

Venue
MAHARSHI V.R. SHINDE AUDITORIUM
Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

: Cheif Editor :
Principal Dr. R.K. Shanediwan
Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

: Editor :
Mr. S. H. Kamble
(Head, Dept. of Commerce)

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Editorial Board

Prin. Dr. R. K. Shanediwan

Mr. S. H. Kamble

Dr. M. A. Shinde

Dr. R. D. Mandanikar

Conference Chairman
Principal Dr. R. K. Shanediwan
Shri. Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya,
Dasara Chowk, Kolhapur.

Conference Convener
Mr. S. H. Kamble
Head and Assistant Professor
Department of Commerce, Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur.
Mob. No. 9922615556

Conference Co-Convener
Dr. M. A. Shinde
Assistant Professor
Mob. No. 9371181885

RESOURCE PERSONS :

1) **Prof. Dr. S. S. Mahajan,**
Dean, Commerce and Management,
Shivaji University, Kolhapur (Maharashtra)
2) **Prof. Dr. P. M. Kulkarni**
Professor, KLS Institute of Management Education and Research,
Belgaum (Karnataka)
3) **Dr. K.V. Marulkar,**
Chairman BOS in Commerce and Asst. Prof. Department of Commerce and Management,
Shivaji University, Kolhapur. (Maharashtra)
4) **Dr. A. G. Suryavanshi**
Asst. Professor, Dept. of Commerce, New College, Kolhapur (Maharashtra)

ADVISORY COMMITTEE:

Hon. Shri Manshing Vijayrao Bondre
Chairman, Shri Shahu Chhatrapati Shikshan Sanstha, Kolhapur
Dr. R. K. Shanediwan
Principal, Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur
Prof. Dr. S. S. Mahajan
Dean, Commerce & Management, Shivaji University, Kolhapur
Prof. Dr. A. M. Gurav
Head, Commerce & Management Department, Shivaji University, Kolhapur
Prof. Dr. Mrs. V. V. Maindargi
Member of Management Council & Academic Council, Shivaji University, Kolhapur

ORGANIZING COMMITTEE

Dr. R. D. Mandanikar (IQAC Coordinator)

Prof. Dr.N.L.Kadam	Dr. K.V. Marulkar	Prof. Dr.S. S. Kulkarni
Dr. A. G.Suryavanshi	Dr. S.V. Bachhe	Dr. Ram Naik
Dr. AmolSonawale	Prof. Dr. M. A. Koli	Mr. A. L. Shinde
Dr. K. G. Kamble	Prof. Dr. S. R. Pawar	Dr. M. S. Dabade
	Dr. S. R. Powar	

Local organizing Committee

Dr. D. K. Valvi	Dr. N. S. Jadhav	Dr. Mrs. S. S. Patil
Mr. R. J. Bhosale	Mr. M. V. Bhosale	Dr. D. L. Kashid-Patil
Dr. K. M. Desai	Dr. A. B. Balugade	Dr. S. V. Shikhare
Dr. P. B. Patil	Dr. Mrs. S. S. Rathod	Dr. P. B. Patil (Librarian)
CA Mrs. C. K. Patil	Mr. K. M. Mali	Adv. Mrs. G. M. Patil
Mrs. U. A. Patil	Mrs. A. M. Inamdar	Mrs. P. V. Salokhe
Dr. Mrs. V. S. Shirgure	Ms. S. T. Patil	

28) IMPACT OF GREEN INNOVATION ON CORPORATE SUSTAINABILITY
Dr. Anita Yadav, Kolhapur || 130

29) Building a Sustainable Future: Responsible Investing Strategies in India
Shrikant Vasant Bacche, Kolhapur ||134

30) साहस पर्यटनाच्या माध्यामातून शाश्वत विकास
डॉ. सुरेश वसंत शिखरे, कोल्हापूर ||136

31) शाश्वत विकास : ध्येये आणि जागतिक परिस्थिती
डॉ. विजय जालिंदर देठे, दसरा चौक, कोल्हापूर ||143

32) एकविसाव्या शतकातील भारताच्या शाश्वत विकासासाठी योगदान
डॉ. अजितकुमार भिमराव पाटील, कोल्हापूर ||147

33) खेल — शाश्वत विकास का एक महत्वपूर्ण प्रवर्तक
Capt. Dr- Prashant Bibhishan Patil, Kolhapur ||153

34) आदिवासी जनजीवन के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गाँव के देवता'
डॉ. सारिका राजाराम कांबळे, कोल्हापुर ||156

35) सामाजिक उत्तरदायित्व से बेखबर कार्पोरेट जगत
प्रो. डॉ. सरोज पाटील, कोल्हापुर ||159

36) शाश्वत विकाससाठी आमचे शेतीतील काही प्रयोग
डॉ. पांडुरंग बाळकृष्ण पाटील, कोल्हापूर ||163

37) INNOVATION AS A BOOSTER OF RURAL ENTREPRENEURSHIP: A CASE....
Dr. Ramdas N. Bolake, Kankavli, Dist- Sindhudurg ||168

38) Sustainable Agricultural development for inclusive economy....
Milind. M. Shinde, Dr. Anup Mule ||173

39) Eco-Friendly Tourism in India: Promoting Sustainable Hospitality
Nikita Nitin Urunkar, Kolhapur ||177

www.vidyawarta.com/03 _ http://www.printingarea.blogspot.com

बाबा तथा विधायक जो असुर समाज के पक्ष में होने का झूठा दिखावा करते है लेकिन इसके पीछे काम करती ओछी राजनीति का चित्रण आया है—''अन्दरूनी बात यह लगती है कि बबवा और विधायक दोनों भितरिया शातिर चीज है। 'वेदांग' कंपनी की साइनबोर्ड से ही बहुत कुछ सूँघ रहा होगा। कुछ बड़ा गेम जरूर होगा आगे। तभी मुखालफत को सोच रहा है ई लोग।''[१] यहाँ पर नेताओं की स्वार्थी वृत्ति का परिचय मिलता है।

ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में पुलिस द्वारा अपनाई गई गुंडागर्दी का परिचय आया है। असुर समाज को लोगों की अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ता है, यह लोग पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ आंदोलन करते है। असुर समाज के लड़कों को पुलिस की मारपीट का शिकार होना पड़ता है। पुलिस उन लोगों पर फायरिंग करती है, कई लोगों को अपनी जान गँवानी पड़ती है। इस घटना को अंजाम देने के लिए पुलिसवाले इन लोगों को नक्सलवादी ठहरा देते है और उनकी हत्या करते है।

झारखंड में स्थित 'असुर समाज' के पूर्वपरंपरागत हथियार बनाने की कला का पतन हो चुका है। साथ ही उनके अस्तित्व पर भी खतरा मंडराता नजर आता है। विवेच्य उपन्यास में लेखक ने असुर समाज का जनजीवन, उनकी पीड़ा,गरीबी, अत्याचार, उनके अस्तित्व की लड़ाई, बड़ी बड़ी कपनियों द्वारा होनेवाला उनका शोषण आदि का विवेचन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने आदिवासी जनजीवन का सूक्ष्मता से रेखांकन किया है।

निष्कर्षत: असुर समाज का जनजीवन तथा उनकी समस्याओं को देखने के बाद आदिवासी जीवन कितना भयावह एवं असुरक्षित है इसे देख सकते है। भारत देश की आजादी के पश्यात भी आज भी ऐसे कई गाँव है जो कि कई समस्याओं का सामना करते हुए नजर हुए अपना जीवनयापन करते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची —

१. अरविन्द कुमार उपाध्याय, www-umrjournal-com पृ. ९४

२. डॉ. देशमुख ज्ञानेश्वर, 'भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास', पृ. १५१

३. रणेंद्र , ग्लोबल गाँव के देवता , पृ. क्र. ६२

४. वही, पृ. क्र. ४९,५०

५. वही, पृ. क्र.१९

६. वही, पृ. क्र.१९

७. वही, पृ. क्र.४९

८. वही, पृ. क्र.८३

९. वही, पृ. क्र.८०

35

सामाजिक उत्तरदायित्व से बेखबर कार्पोरेट जगत

('बाजार' और 'नया बैंक' कविता के विशेष संदर्भ में)

प्रो. डॉ. सरोज पाटील

श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर

सारांश :

भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व के आर्थिक, सांस्कृतिक ढांचे को परिवर्तित कर दिया है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में नई आर्थिक नीति, खुला बाजार, प्रौद्योगिकी और तकनीक का विस्फोट, कम्प्युटर, मोबाईल का तीव्र विकास, सार्वजनिक संस्थानों का नीजि संस्थानों में परिवर्तन, प्रबंधन—वितरण की नई पध्दतियां, विज्ञापनवाद और उसके परिणामस्वरुप निर्माण बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने मनुष्य जीवन को अंतरबाहय परिवर्तित कर दिया है। भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद ने अब पूरे विश्व में अपनी जडे जमा ली है। कार्पोरेट जगत फलता फुलता जा रहा है। कार्पोरेट गव्हर्नेंस के सिद्धांत खोखले बने हुए हैं। निष्पक्षता, पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन, जिम्मेदारी जवाब देगी आदि कार्पोरेट गवर्नेंस के सिद्धांत धूसर बने हुए है। कार्पोरेट जगत अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को नहीं निभा रहा है।

बाजारवाद ने अपनी अलग नीति बनाई हुई है। जहां पर सामान्य व्यक्ति को गुमराह बनाने के षडंत्र खेले जा रहे है। सामान्य व्यक्ति को यह जताया जा रहा है की तुम बडी अभावग्रस्त जिंदगी जी रहे हो। बडी सी दुनिया में बहोत सारी ऐसी वस्तुएं, बाते मौजूद है जिनसे तुम अनभिज्ञ हो उन चीजोंको प्राप्त करना तुम्हारा अधिकार है। तुम चाहो तो हमारी मदत से दुनिया की हर चीज तुम प्राप्त कर सकते हो उसके लिये तुम्हे हमारे साथ चलना होगा।

वैश्विक स्तर पर आ रहे इस बदलाव से देश विदेश के साहित्यिक, चिंतक प्रभावित हुए है। हिंदी साहित्य पर भी इस परिवर्तन का काफी प्रभाव स्पष्टता से दिखाई देता है। हिंदी साहित्यिकों ने अत्यंत गहराई और संवेदनशीलता से भूमंडलीकरण और उसके प्रभावों को रेखांकित किया है। जया जादवानी लिखित 'बाजार' और मंगलेश डबराल कृत 'नया बैंक' इन कविताओं को हम उत्तर आधुनिक समय का वास्तव चित्रण कह सकते है। आधुनिकता के नाम पर समाज में आ रहे बदलाव को इन दोनों कवियों ने बडी वास्तविकता के साथ रेखांकित किया है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में प्रतिस्पर्धी दिमाग और विकास के सपनों को साथ लिए आगे चल रही पीढी बडी आत्मकेंद्रित बनती जा रही है। पूंजीवादी वर्ग व्यापार के बहाने ग्राहक वर्ग को ललचा कर बाजार की ओर आकृष्ट कर रहा है। मॉल कल्चर विकसित हो रहा है। शहरों में खुल रहे बडे बडे मॉल्स ग्राहकों को अपना दिवाना बना रहे है। मॉल्स में सजाकर रखी आवश्यक अनावश्यक चीजें अपनी आकर्षकता से ग्राहकों को अपनी ओर खींच रही है। जिससे ग्राहक बाजारों का शिकार बनकर अपना जीवन स्तर उंचा उठाने में मशगुल बना है। इसे कार्पोरेट जगत की जीत कहा जा सकता है। परंतु कार्पोरेट जगत कितनी मात्रा में अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को निभा रहा है यह प्रमुख प्रश्न बना हुवा है।

नये से खुल रहे बैंक बडी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। पूंजीवादी वर्ग और बैंकों के समन्वय में बडी मात्रा में उपभोक्ता संस्कृति का निर्माण किया जा रहा है। इस प्रक्रिया में ग्राहक वर्ग अपने जीवन स्तर को अधिकाधिक उंचा उठाने में अनेकों बार असफल भी बन रहा है। जिससे सामान्य ग्राहक वर्ग में घोर निराशा व्याप्त हो रही है। समय रहते इस पर नियंत्रण ले आना आवश्यक है। अन्यथा वैश्विकरण एवं कार्पोरेट जगत का फैलाव भारतीय समाज व्यवस्था को पूरी तरह तोड देगा। जया जादवानी और मंगलेश डबराल ने इस सत्य को आलोच्य कविताओं के माध्यम से बडी मार्मिकता से पाठकों के समक्ष रखा है।

बीज शब्द —

बाजार, नया बैंक, पारदर्शिता, गुमटियां, दिवालियेपन, जासूस, भकुआए, ग्लानि, खेद

प्रस्तावना —

भूमंडलीकरण के लिए वैश्विकरण, खगोलीकरण अंग्रेजी में ग्लोबलाइजेशन आदि शब्दों का प्रयोग हो रहा है। भूमंडलीकरण अर्थात खुला व्यापार। भूमंडलीकरण मूलत: एक आर्थिक संकल्पना है। दुनिया की अर्थसत्ता एवं व्यापार तंत्र को एक करना इसका लक्ष्य है।

वस्तुत: अठारहवी और उन्नीसवी सदी में साम्राज्यवाद के व्दारा वैश्विकरण का ढांचा युरोपिय देशों में बना। विश्व के अनेक भूखंडो पर वे वहां के मूल निवासियों को हटाकर खुद वहां पर बस गए। दूसरे विश्वयुध्द के बाद दो तरिकों से वैश्विकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। एक वैश्विकरण अमरिका का आर्थिक साम्राज्यवाद था। यहां से धनिक देशों के लिए शोषण का नया मार्ग खुला, वहीं दूसरी ओर संयुक्त राष्ट्र महासभा में राष्ट्रों की बराबरी मानी गई। १९९५ में विश्वबैंक, मुद्राकोश और व्यापार संगठन तीनों ने वैश्विकरण के तहत चल रही आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं व्दारा शोषण के नए रुपों को जन्म देना शुरु किया। १९९१ के बाद भारत में सरकार की नई उद्योग नीतियों के अंतर्गत वैश्विकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। जिससे औद्योगिक क्षेत्र में नई चहल निर्माण हो गई। भारतीय अर्थव्यवस्था उदारिकरण और नीजिकरण से काफी विकसित हुई और भारत भूमंडलीकरण के गर्त में आ गया।

वर्तमान में भूमंडलीकरण या वैश्विकरण एक ऐसी धारणा है जिसका मूलाधार है बाजार, बाजारवाद या उपभोक्तावाद वस्तुत: इसका उद्देश्य लोकमंगल या विश्वकल्याण की भावना होना अपेक्षित था पर यह उद्देश्य कहीं गुम हो गया है। कार्पोरेट जगत को अपने उत्तर दायित्व का भूलावा हो गया है।

भूमंडलीकरण के दो प्रमुख लक्ष्य रहे है एक विश्वसमुदाय का एकीकरण और दूसरा वैश्विक पूंजीवाद को बढावा देना। इसने भारतीय संस्कृति एवं मानव जीवन को गंभीर रुप से परिवर्तित किया है। भूमंडलीकरण से उत्पन्न नवीन पूंजीवाद, औद्योगिक क्रांति तथा यांत्रिक अविष्कार के चलते एक ओर आर्थिक संपन्नता विकसित हो रही है तो दूसरी ओर विज्ञापन, करियर, उपभोक्तावाद को गति मिल रही है। इन सबके परिणाम स्वरुप

समाज नैतिक दृष्टि से पतित बनता जा रहा है। मूल्य विघटन समाज में व्याप्त हो रहा है। भूमंडलीकरण ने २१ वी सदी को सबसे अधिक प्रभावित किया है। आज भारतीय बाजार को शक्तिशाली बनाने का पूरा श्रेय भूमंडलीकरण को जाता है। साथ में भूमंडलीकरण के कारण पूंजीवाद का नया चेहरा हमारे सामने आ रहा है। भूमंडलीकरण नाम के पीछे बडा आर्थिक षडयंत्र छिपा है। पूंजीवादी विकसित देशों ने ग्लोबल व्यापार, बंधनमुक्त व्यापार, उदारीकरण, वैश्विकरण जैसे सुहावने शब्दों में उसे लपेटकर परोसने का काम बढिया ढंग से किया है।

आज भारत वैश्विकरण के परिणाम स्वरुप आ रहे जबरदस्त बदलाव से गुजर रहा है। शेखर जोशी के अनुसार, 'वैश्विकरण' और भूमंडलीकरण आज की समस्याएं है। लेकिन इसके मूल में प्रेमचंद की महाजनी सभ्यता काम कर रही है।... यह प्रेमचंद के बाद का भारत है, जिसकी तकदीर पार्लियामेंट में हर बार बढते जाते अरब पतियों और बाहुबलियों के हाथों में है।'' (पृ.१४,१५, वागर्थ, मासिक पत्रिका)

भूमंडलीकरण पूंजिपतियों की वाणिज्य नीति के अनुसार अपनी जडें जमा रहा है जिससे आज पूरा विश्व प्रभावित है। वैश्विक स्तर पर आ रहे इस जबरदस्त परिवर्तन ने देश–विदेश के साहित्यिकों, चिंतको को काफी प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। काशिनाथ सिंह, द्रोणवीर कोहली, संजीव, राजू शर्मा, मंगलेश डबराल, अलका सरावगी, ममता कालिया, अनामिका, जया जादवानी ये वे नाम हैं जिन्होने अत्यंत गहराई से इन स्थितीयों को रेखांकित किया है।

जया जादवानी लिखित 'बाजार' और मंगलेश डबराल कृत 'नया बैंक' कविता कार्पोरेट गव्हर्नेंस के परीपेक्ष्य में भारत के कार्पोरेट जगत की वास्तव स्थिति को रेखांकित करती हैं। भूमंडलीकरणवादी संस्कृति को बडी वास्तविकता के साथ रेखांकित करती है। इस पर विस्तृत चर्चा प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य है।

कार्पोरेट जगत (सामूहिक शासन) की नैतिकताहीन नीति –

१९९० के बाद संपूर्ण भारत वैश्विकरण के प्रभावतले परिवर्तित होने लगा। कार्पोरेट जगत ने अपनी नैतिकता को त्याग देना आरंभ किया। इनका लक्ष्य केवल इतना ही रहा कि अधिकाधिक ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करो। जिसके चलते नयी नयी नीतियों का अवलंब होने लगा। आम आदमी को अपने जीवन स्तर के प्रति अप्रसन्न बनाने की नीति आरंभ हुई। छोटी छोटी चीजों के साथ खुश रहनेवाला सामान्य व्यक्ति उपभोक्तावादी संस्कृति की तरफ आकर्षित होन लगा। खुद के जीवनस्तर में उसे अचानक अभाव महसूस होने लगा। अपनी ही जीवनशैली उसे अतिसामान्य प्रतीत होने लगी। क्योंकि उसे घर से बाहर निकलते ही अनगिनत लुभावनी चीजों से भरे बाजार आकर्षित करने लगे। ऐसी ऐसी चीजें जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। यदि वे चीजें अपने घर आ जाए तो निश्चित ही अपना जीवन स्तर उंचा हो उठने का सपना वह देखने लगा। 'बाजार' कविता में बाजारों के वर्णन में कवयित्री लिखती हैं,

वे फुसफुसाकर हमें बताते है कि
हमारे पास नहीं है क्या क्या
वे हमें जगाए रखते हैं अभावों के प्रति
वे हमें हमेशा भूखा रखते हैं (कविता – 'बाजार')

बाजारों में रखी नई नई चीजें खरीदने का भूखा बनता जा रहा सामान्य व्यक्ति खुद के जीवनस्तर के प्रति हीनता के भाव से ग्रस्त होने लगा। इसे बाजारवाद की जीत मान लेना सार्थक होगा।

कार्पोरेट जगत से प्रभावित आम आदमी –

उपभोक्तावादी संस्कृति का शिकार बनता जा रहा जनसामान्य अपने जीवनस्तर के प्रति अत्याधिक मात्रा में हीनता के भाव से ग्रस्त होकर जीवन स्तर में सुधार के लिए प्रयत्नशील बनने लगा। इसे कार्पोरेट जगत की जीत मानना होगा ठिक उसी समय भारत में भूमंडलीकरण के कारण पूंजी की लेन देन वैश्विक हो गई। बैंकिंग, बीमा, उद्योग, तंत्रज्ञान, संस्थाओं का संलग्नीकरण, विलयन, हस्तांतरण, गतिमान बना। बैंक नये नये तरिके से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने लगे ताकि लोग बैंको से पैसे उठाकर बाजारों में पहुंचे। नया बैंक कविता मे मंगलेश डबराल कहते है,

नए बैंक में एक ठंडी पारदर्शिता है
नया बैंक अपने को हमेशा चमकाकर रखता है

उसका फर्श लगातार साफ किया जाता है

वह अपने आसपास ठेलों पर सस्ती चीजें बेचनेवालों को भगा देता है और

वहां कारों के लिए कर्ज देनेवाली गुमटियां खोल देता है।

बाजार के ऐसे अनेक सारे आकर्षण सामान्य व्यक्ति को अपने जीवन स्तर में सुधार ले आने की भावना से प्रेरित करने में सहायता देने लगे।(कविता – 'नया बैंक')

विज्ञापनवाद का विकास –

आज भूमंडलीकरण के कारण विज्ञापनवाद पनपा है और इससे उपभोक्तावाद। आज इंसान की पहचान केवल एक उपभोक्ता के रुप में रह गई है। भूमंडलीकरण के कारण परिवर्तित हो रही दुनिया मनुष्य जीवन को बाहर और भीतर दोनों ओर से प्रभावित कर रही है।

बाजार का मूल तत्व होता है जरुरत के अनुसार पूर्ति परंतु आज वैश्विकरण ने इस तत्व को पूरी तरह बदल दिया है। नए नए उद्योग अपने प्रोडक्ट की मांग को पैदा कर रहे हैं अनावश्यक चीजों को लुभावने विज्ञापनों के जरिए सामान्यों के सामने कुछ इस तरीके से परोसा जा रहा है कि उन चीजों को खरीदना उनकी प्राथमिकता बनती जा रही है। गाजे बाजे और विज्ञापनों के जरिए बाजारवाद सामान्यों पर लादा जा रहा है। कार्पोरेट जगत आम आदमी को उकसाने के नये नये तरीके खोज रहा है। उत्पाद चाहे देशज हो या बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बात तो केवल मुनाफे की होती है। जबरदस्त मुनाफा कमाने के लिए विज्ञापनों के जरिए ग्राहकवर्ग को बडी मात्रा में भरमाया जा रहा है।

'बाजार' कविता में कवयित्री लिखती है,

कैसे जान जाते है वे हमारी जरुरतें कहे बिना हमारे
प्रेस करने की टेबल, कपडे धोने को दो हाथ,
चमडी चमकाने के कारगर नुस्खे
बच्चों के अजीबोगरीब खिलौने
उन्हे खिलाने पिलाने, सुलाने के ताम – झाम
गद्दे – तकिए दू पलंग, सोफे
इतना तो खुद हमें नहीं पता हमें चाहिए क्या – क्या (कविता – 'बाजार') यह बाजारवाद केवल साधन संपन्न वर्ग को ही अपना उपभोक्ता नहीं बनाता बल्की साधनहिन को भी उपभोक्ता न बन पाने की, स्थिति में कुंठित एवं निराश बनाता जा रहा है।

उपभोक्ता वर्ग की आर्थिक सहायता करने बैंक हाथ जोडे बडी तत्परता दिखा रहे है। पूंजीवादी वर्ग से संगठन के समन्वय में बैंक बडी मात्रा में उपभोक्ता वर्ग के निर्माण में जूटे है। 'नया बैंक' कविता में कवि लिखते है,

वह (बैंक) एक सपाट और रोशन जगह है।
विशाल कांच की दीवार के पार
एअर कंडिशन भी बहुत तेज है।
जहां लोग हांफते पसीना पोंछते आते है।
और तुरंत कुछ राहत महसूस करते है।
नए बैंक में एक ठंडी पारदर्शिता है।
नया बैंक अपने को हमेशा चमकाकर रखता है। (कविता –'नया बैंक')

ग्राहक को हर तरीके से अपनी ओर आकर्षित करने में जूटे इन बैंको के पास नीतिमूल्यों की कमी होती जा रही है। अपने ग्राहकों को आर्थिक संरक्षण देना अब बैंको की प्राथमिकता नहीं रही है। अब बैंक इसीलिए खुले है कि वे ऋण के रुप में ग्राहकों को पैसा मुहैय्या करा दे। ताकि उन पैसों के जरिए ग्राहक बाजार से जुड जाए।

नया बैंक सिर्फ दिए जानेवाले कर्ज
और लिए जानेवाले ब्याज का हिसाब रखता है।
प्रोसेसिंग शुल्क, मासिक किस्त, पेमेंट, चार्जेस,
चक्रवृध्दि ब्याज, लेट फाइन और पेनल्टी वसूलता है। और एक जासूस
की तरह देखता रहता है कि कौन अमीर हो रहा है। (कविता –'नया बैंक')

यह भूमंडलीकरण एवं कार्पोरेट जगत का सबसे विषम पक्ष है। विज्ञापनवादी एवं उपभोक्तावादी संस्कृति की जकड समाज पर इतनी तेज हो रही है कि उसमें से नैतिकता, जीवनमूल्य, संयम, आस्था, विश्वास, सहयोग की भावना लगभग समाप्त हो रही है।

बाजार का शिकार उपभोक्तावर्ग –

वैश्विकरण के पूर्व बाजार मेलों, हाटों के जरिए व्यापार करता था पर अब वैश्विकरण ने कमाई के विविध मार्ग ढूढ निकाले है। इसमें मॉल कल्चर तेजी से पसंदीदा बनता जा रहा है। एक ही स्थान पर खान–पान, पहनने ओढने, साज–श्रृंगार, गृह सजावट से लेकर न जाने कितनी सारी चीजें मॉल में कुछ इस तरह सजाकर रखी जाती है कि ग्राहक देखते ही उसे खरीदने के लिए व्याकूल हो जाता है। ऐसे बाजारों के लिए कवयित्री ने लिखा है,

'वे हमें हमेशा भूखा रखते है।
वे हमसे मांगते कुछ नहीं

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March- 2024

ISSUE No - (CDLXIII) 463

75th Years of Indian Economy: Achievements and Challenges

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. R. K. Shanediwan
Principal
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

Editor
Prof. Dr. Mrs. S. S. Rathod
Head, Deptt. of Economics,
Shri Shahaji Chhatrapati
Mahavidyalaya, Kolhapur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – (SJIF) –8.632 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2024

ISSUE No - (CDLXIII) 463

75th Years of Indian Economy: Achievements and Challenges

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. R. K. Shanediwan
Executive-Editors
Principal,
Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Prof. Dr. Mrs. S. S. Rathod
Editor
Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Dr. D. P. Gawade
Co-Editor
Shri Shahaji Chhatrapati Mahavidyalaya, Kolhapur

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher

	प्रा. डॉ. संजय शिवाजी ओमासे	
46	भारतातील मानव संसाधन विकास सहा.प्रा.सोनाली काशिनाथ गवळी	216
47	विकास पर्यावरण आणि शाश्वतता सहा. प्रा. सुषमा युवराज पाटील	220
48	भारतातील महिला सक्षमीकरण आणि महिला साक्षरता प्रा. किरण सदाशिव कांबळे	225
49	अमृतमहोत्सवी भारतीय अर्थव्यवस्था : एक दृष्टीक्षेप ! श्री. चंद्रकांत भूपाल पाटील ,प्राचार्य. डॉ.विजयकुमार पाटील	229
50	भारतीय अर्थव्यवस्थेसमोरील पर्यावरणीय समस्या प्रा. वर्षा संदीप पाटील	236
51	नवीन शैक्षणिक धोरण आणी उच्च शिक्षणाचे आंतरराष्ट्रीयीकरण डॉ. आर. डी. मांडणीकर	241
52	सातारा जिल्ह्यातील भूमी उपयोजन कार्यक्षमतेचा अभ्यास श्री. तेजस चव्हाण ,डॉ. डी. एल. काशिद-पाटील ,श्री. गौरव काटकर	246
53	भारतीय अर्थव्यवस्थेची सद्यस्थिती आणि आव्हाने डॉ. विजय जालिंदर देठे	252
54	मौजे आगर मधील जाधव पोल्ट्री फार्म : एक आर्थिक चिकित्सक अभ्यास प्रा.डॉ. प्रभाकर तानाजी माने	256
55	डॉ.शां.ग.महाजन यांचे ग्रंथालय आणि माहितीशास्त्र साहित्यातील योगदान सौ.नीता पाटील	261
56	उच्च शिक्षणातील सल्लागार, मार्गदर्शक, दीपस्तंभ: प्रा. सुधाकर मानकर सर. डॉ.पांडुरंग बाळकृष्ण पाटील	268
57	भारत में खेल विकास के लिए योजनाएँ **Capt. Dr. Prashant Bibhishan Patil**	271
58	आजाद भारत की आर्थिक विषमता और जनवादी कवि 'धूमिल' प्रो.डॉ.सरोज पाटील	273
59	आर्थिक विपन्नता के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास 'बरखा रचाई' प्रा. डॉ. सारिका राजाराम कांबळे	277
60	भाषा प्रौद्योगिकी : चिंतन और रोजगार डॉ. अक्षय राजेंद्र भोसले	280
61	Regional Trend Of Milk Production In Maharashtra State Aishwarya Hingmire **Mayur Goud, Dr. D. L. Kashid -Patil Dr. N. D. Kashid- Patil**	285
62	Micro Study of Demographic Characteristics of Gaganbavda Tehsil in Kolhapur District **Mr. Shubham Tanaji Patil, Dr. D. L. Kashid-Patil**	290
63	Impact Of Marxism On English Literature **Mrs. S. K. Desai**	299
64	Charting the Course: Navigating Challenges and Opportunities in India's Economic Development Landscape **Ms.Komal Suresh Jagtap**	301
65	कोल्हापूर जिल्ह्यातील निवडक शेतीक्षेत्रातील मृदा परीक्षणाचा चिकित्सक अभ्यास प्रा. गौरव काटकर,डॉ. सौ. एन. डी. काशिद-पाटील,प्रा. तेजस चव्हाण	305

B.Aadhar International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.632, Issue NO, (CDLXIII) 463
ISSN : 2278-9308
March, 2024

आजाद भारत की आर्थिक विषमता और जनवादी कवि 'धूमिल'

प्रो.डॉ.सरोज पाटील
श्री शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, कोल्हापुर मो.9921770661 Email-saroj120575@gmail.com
Address : 1808 'A' Brahmeshwar Bag, Shivaji Peth, Kolhapur (Maharashtra) 416012

सारां ा –

आजादी के 76 साल बाद दे ा भले ही विकास की ओर बढ रहा है परंतु आर्थिक विशमता दे ा की सबसे बडी विडंबना बनी हुई है। साठोत्तरी हिंदी साहित्य के श्रेश्ठ जनवादी कवि सुदामा पांडे 'धूमिल' इस विडंबना पर केवल साहित्यिक चर्चा करते रहने के पक्ष में नहीं है वे इन स्थितियों में बदलाव देखना चाहते हैं। जनतंत्र की नींव अर्थात दे ा का आम आदमी कवि 'धूमिल' की कविताओं के केंद्र में है। जो चिखता, चिल्लाता, बौखलाई हुई अवस्था में जीवन जीने के लिए बाध्य बना हुआ है। आजादी से उसका मोहभंग हुआ है। इन 76 सालों में दे ा की व्यवस्था का ि ाकार बने हुए आम आदमी की ि ाकायत सुनने के लिए दे ा के विधायकों,सरकारी अधिकारियों, पूंजिपतियों के पास समय नहीं है। उन पर स्वार्थसिध्दी की धून सवार है। कहने को तो दे ा में काम हो रहा है, विकास के नाम पर पानी की तरह पैसा बह रहा है पर इसका सच्चा लाभार्थी कौन है यह प्र न निरुत्तर है। आम आदमी को गुमराह कर दे ा का स्वार्थांध वर्ग अपने खिसे भर रहा है। समाज का मध्य वर्ग धीरे धीरे लुप्त होता जा रहा है। उच्च और निम्न वर्ग के बीच की खाई अधिक गहरी बनती जा रही है। गरीब अधिक गरीब और अमीर पहले से भी अमीर बनता जा रहा है। ऐसे में आम आदमी भरमा गया है। कवि 'धूमिल' दे ा के आम आदमी को अपने भाब्दों के जरिए अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का धैर्य देना चाहते हैं। ताकि दे ा के स्वार्थांध सूत्रधार दे ा के आम आदमी की क्षमता महसूस करें। अन्याय को अंजाम देने से कतराए। आम आदमी के क्रांतिकारी विचारों से भयभीत बन जाए। आत्मचिंतन में लीन हो जाए। उसी समय सकारात्मक बदलाव संभव है। तभी दे ा की आर्थिक असमानता दूर होने का मार्ग प्र ास्त हो सकता है।

मूल ाब्द– राजनीति, जनतंत्र, विकास, पूंजीवाद, विसंगती

प्रस्तावना–

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ असंख्य भारतवासियों ने भविश्य के सुनहरे सपने लेकर आजाद भारत में प्रवे ा किया। भारुवाती दिनों में जनता अंग्रेजों से मुक्ति का आनंद लेने में व्यस्त रही। बाद के कुछ दिनों में जनता विकास के सपने देखती रही फिर कुछ दिन सपनों के पूरा होने के इंतजार में बित गए। बितते समय के साथ धीरे धीरे जनता जनतांत्रिक शासन प्रणाली की विडंबनाओं से वाकिफ होने लगी। देश की वास्तव स्थिति समझने लगी। क्योंकि देश एक ओर सामंतवादी व्यवस्था में बंधा हुआ था । वहीं दूसरी ओर जनता देश की बिकट आर्थिक स्थिति से रुबरु हो रही थी। आजादी के पश्चातवाले सुनहरे भविश्य के सपने कहीं धूसर बनते देख देश का आम आदमी अंदर से टूट रहा था। दे ा के सूत्र गिनेचुने आत्मकेंद्रित स्वार्थांध सूत्रधारों के हाथ में जा चुके थे। दे ा की औद्योगिक, आर्थिक नीति के केंद्र में आम आदमी नहीं था। देश का पूंजिपति वर्ग उस पर हावी बनता जा रहा था। परिणामतः देश की औद्योगिक, सामाजिक एवं प्रौद्योगिक क्षेत्र में कहीं भी समन्वय दिखाई नहीं दे रहा था। विशम स्थितियां निर्माण होने लगी। इन विशम स्थितियों के केंद्र में प्रमुख समस्या बेरोजगारी एवं गरीबी थी। देश के आर्थिक विकास और आर्थिक समानता का लक्ष्य कहीं बिखरता दिखाई देने लगा। दे ा का आम आदमी मोहभंग की स्थिति से गुजरने लगा।

यह सर्वग्राहय है कि साहित्य अपने समकालीन परिवे ा से प्रभावित रहता है। अतः दे ा की विशम स्थितियों से हिंदी साठोत्तरी कवि बिल्कुल भी अनभिज्ञ नहीं रह पाएं। जनतंत्र की सफलता प्रश्नचिन्ह बनकर उन्हें अस्वस्थ बनाने लगी। विशम स्थितियों से प्रभावित साठोत्तरी हिंदी कवियों की लंबी सूची है जिसमें से प्रत्येक कवि ने अनु ाासनहीन व्यवस्था का शिकार आम आदमी और उसके जीवन की आर्थिक दुर्द ा को रेखांकित करने का प्रयास किया है। इस सूची का सुदामा पांडे 'धूमिल' नाम धूमकेतू के समान साठोत्तरी कालावधी को चिरता हुआ आम आदमी के मतिश्क में प्रवेश कर उसे सजग बनाता है। परिस्थितियों के खिलाफ क्रांति के लिए भडकाता है। आर्थिक विशमता के लिए जिम्मेदार दे ा के सूत्रधारों से सवाल करने का धैर्य आम आदमी को देता है। 'धूमिल' की कविताएं पूंजीवाद का शिकार,

आर्थिक विशमता, विपन्नता से जुझते आम आदमी की लाचारी, गरीबी, असहायता, वेदना को अत्यंत मार्मिकता से रेखांकित करती है।

भ्रश्ट राजनीति–

आजाद भारत में आजादी और गांधी का नाम लेकर स्वार्थ सिध्दि में जुटे विधायकों से कवि सख्त नफरत करते हैं। उनकी दृश्टि में वे ही दे ा की आर्थिक विशमता के जिम्मेदार है। समकालीन संदर्भ में 'भूख' यह भाब्द आम आदमी के जीवन की परिभाशा बना हुआ है। राजनेताओं की चालाकी, स्वार्थांधता, आत्मकेंद्रियता, आम आदमी का मनोबल तोड रही है। दीन–हीन जीवन जीने के लिए आम आदमी को बाध्य बना रही है। कवि इस जनतांत्रिक दे ा में व्याप्त आर्थिक असमानता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए लिखते हैं,

"वह कौन सा प्रजातांत्रिक नुस्खा है,
कि जिस उम्र में
मेरी माँ का चेहरा
झुर्रियों की झोली बन गया है
उसी उम्र की मेरे पडोस की महिला
के चेहरे पर
मेरी प्रेमिका के चेहरे सा
लोच है।" (संसद से सडक तक–'धूमिल')

यह समाज की आर्थिक विशमता ही है जहाँ चुनिंदा लोग शानो शौकत भरी आराम की जिंदगी जी रहे हैं, वही दे ा का बडा सा जनसमुदाय रोजी रोटी का मोहताज है। समाज की विसंगतियों विव ाताओं, अभावों को दूर करने का जिम्मा उठाने की बात विधायक कहीं भूल से गए हैं। उन पर अपने परिवारजनों को साथ लेकर व्यक्तिगत विकास करा लेने की धून सवार है। ऐसी भ्रश्ट राजनीति पर कडा प्रहार करते हुए 'धूमिल' लिखते हैं,

"एक आदमी रोटी बेलता हैएक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी हैजो न रोटी बेलता है न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता हैमैं पूछता हूँ वह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे दे ा की संसद मौन है।" (रोटी और संसद –'धूमिल')

जनता तो राजनेताओं की दृश्टि में प्यादे हैं शतरंज का पट विधायकों के हाथ में है और वे मनमाने तरिके से अपनी जीत के लिए प्यादों को चला रहें हैं। सरकार की ओर से आम आदमी के लिए बन रही योजनाओं पर पानी की तरह पैसा लगाया जा रहा है परंतु पैसे आम आदमी तक पहुंचते पहुंचते बीच रास्ते ही कहीं गुम हो रहे हैं, विधायकों के खीसे गर्म हो रहें हैं। दे ा में आर्थिक विशमता तेजी से व्याप्त हो रही है।

लालफिताशाही से प्रभावित समाजजीवन –

आजाद भारत की सबसे बडी विडंबना है लालफिता ाही वर्ग का उदय। अंग्रेजों के पीछे उनके रिक्त स्थानों पर लालफिताशाही के बाशिंदे बडे आराम से आसीन हो गए। राजनीति के आश्रय से यह वर्ग फलता फूलता गया और देखते देखते उनकी बढती आबादी ने आम आदमी को निगलना भाुरु किया। छोटे छोटे गावों से लेकर राजधानी तक इस वर्ग ने अपनी जडे पक्की कर ली। प्राप्त अधिकारों के गैरउपयोग से आम आदमी पर रोब झाडता यह वर्ग दे ा में आर्थिक विशमता को अधिक सुदृढ बनाने में योगदान देता रहा। कविको इन अधिकारियों के चेहरे आक्टोपस जैसे प्रतित होते हैं। कवि ने स्वयं अपनी सरकारी नौकरी के दरम्यान उच्च पदस्थ अधिकारियों के कुटिल ाडयंत्र को अनुभूत किया था और उन्हें बेनकाब करने के प्रयास में खूब सारी आंतरिक यातनाओं को सहा भी था। इन्हें बेनकाब करने की कवि की निर्भयी वृत्ति को दबाने एवं कवि को सबक सीखाने के लिए क्रोधित अधिकारियों ने अनेकों बार उनका एक जगह से दूसरे स्थान पर तबादला कर दिया। कवि के अनेक स्थानांतरण केवल सरकारी अधिकारियों के ाडयंत्र रहे। कवि लिखते हैं,

"मैं कुछ कहना ही चाहता था कि एक धक्के ने
मुझे दूर फेंक दिया। इससे पहले कि मैं गिरता
किन्हीं मजबूत हाथों न मुझे टेक दिया।
अचानक भीड से निकल कर एक प्रशिक्षित

दलाल मेरी देह में समा गया।
दूसरा मेरे हाथ में एक पर्ची थमा गया।
तीसरे ने मुझे एक मुहर देकर पर्दे के पीछे धकेल दिया।
भय और अनिश्चय के दुहरे दबाव में
पता नहीं कब और कैसे और कहाँ
कितने नामों और चिन्हों और शब्दों
को काटते हुए मैं चीख पडा
हत्यारा, हत्यारा, हत्यारा।'' (पटकथा –'धूमिल')

देश के उच्चपदस्थ अधिकारी कवि की नजरों में हत्यारें हैं। इन हत्यारों से देश का आम आदमी सहानुभूति या सहायता अपेक्षा क्या रखें ? राजनीति के आश्रय में पनप रही लालफिताशाही दे ा में वर्ग विभाजन की खाई को अधिक गहरी बना रही है।

पूंजीवादी व्यवस्था–

अपनी आर्थिक विपन्नता के चलते धूमिल पर पारिश्रमिक काम करने की नौबत आई जिसका उन्होंने शांति से स्वीकार किया। जीविका के लिए संघर्शरत धूमिल का इसी दौरान पूंजीपति वर्ग से सामना हुआ । उन्होंने देखा कि पूंजीपतियों व्दारा मजदूरों के संग बडा ही घृणित व्यवहार होता है। गुलामों के अथक परिश्रम, उनके आंसू, खून, पसीने से पूंजीपति वर्ग अपने लिए संपत्ती के पहाड खडे करता है। 'धूमिल' लिखते हैं,

''यद्यपि यह सही है कि मैंकोई ठंडा आदमी नहीं हूँ
मुझमें भी आग है मगरवहभभक कर बाहर नहीं आती
क्योंकि उसके चारों तरफ चक्कर काटता हुआ
एक 'पूंजीवादी' दिमाग है।'' (पटकथा–'धूमिल')

इस जनतांत्रिक देश मेंपूंजीपतियों व्दारा आम आदमी के विद्रोह को दबाया जा रहा है। पूंजीपतियों व्दारा बिछाए जाल में धसते जा रहे देश के आम आदमी का भविष्य क्या हैं ? इस प्र न का उत्तर बडा ही सहज है।

आम आदमी के जीवन की लाचारी –

आम आदमी के जीवन की लाचारी से कवि बेहद व्यथित है। रोजी रोटी की प्राथमिकता को साथ लेकर जीने के लिए विव ा, लाचार देश का आम आदमी कवि की दृष्टि में जनतंत्र की पराजय है। कवि स्वयं इस व्यथा से गुजरा है। प्रकृति अस्वास्थ के कारण उन्होंने अपनी कंपनी के मालिक से काम हेतु यात्रा करने से इन्कार दर्शाया तब मालिक ने उन्हें सुनाया कि, I am Paying you for my work not for your health' कितनी उद्घटता। पूंजीपति वर्ग और नौकर के बीच की यह घटना केवल आर्थिक असमानता की वजह से उत्पन्न हुई है। इतना अपमान सहने के बावजूद उसी काम पर बने रहने की विवशता आम आदमी की लाचारी को उद्घाटित करती है कवि लिखते हैं,

''दुःख होता है अगर किसी को
मिली नौकरी छूट गई होलेकिन उतना नहीं
कि जितनाबार बार सुनने पर भी फटकार
आदमी लौट काम परफिर आया हो
कालर फटी कमीज पहनकर'' (पटकथा – 'धूमिल')

यह दे ा के आम आदमी के जीवन की सच्चाई है। विपरित और विसंगत परिस्थितियों में जिंदा रहने की विवशता है।

निश्कर्श –

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में जनतांत्रिक शासन व्यवस्था विडंबनाओं की ि ाकार बनी। देश में एक ओर सामंतवादी व्यवस्था ने जडें जमा ली, वहीं दूसरी ओर तेज गति से गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक विशमता आदि समस्याएं पनपती गई। परिपूर्ण आर्थिक विकास और आर्थिक समानता का लक्ष्य पूरा होना लगभग असंभव बनता गया। इन परिस्थितियों को अत्याधिक यथार्थ रुप में रेखांकित करता 'धूमिल' का काव्य अधिक प्रासंगिक है, जो दे ा के आम आदमी को इन स्थितियों में सकारात्मक बदलाव ले आने के लिए सजग बनाता है। समाज की आर्थिक विशमता मिटाने का सौ प्रति ात आग्रही है।

संदर्भग्रंथ –

- संसद से सडक तक – धूमिल, राजकमल प्रकाशन, पेपरबॅक्स, 1993
- धूमकेतु धूमिल और साठोत्तरी कविता – मीनाक्षी जोशी, राधाकृश्ण प्रका ान, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 2009
- कालयात्री है कविता – प्रभाकर श्रोत्रिय, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रथम संस्करण, 1993
- समकालीन प्रतिनिधी कवि – अनंत किर्ति तिवारी, साहित्य रत्नालय,कानपुर, प्रथम संस्करण, 1995
- समकालीन कवि और काव्य – कल्याण चंद्र चिंतन प्रकाशन, नौबस्ता कानपुर, प्रथम संस्करण, 1996

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.367

Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Socio-Cultural Context in 21st Century English, Hindi and Marathi Literature

(Special Issue No.128)

Chief Editor

Dr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Prof. (Dr.) Trishala Kadam

Editors

Prof. (Dr.) Subhash Jadhav (Marathi)

Mr. Sudhakar Indi (Hindi)

Mr. Dipak Sarnobat (English)

Minaj Naikawadi

Sr.No.	Author Name	Research Paper / Article Name	Page No.
39	Karishma Amir Jamadar	Literature , Culture and Gender	119
		Hindi Language Papers	
40	डॉ. शोभा माणिक पवार	21 वी सदी की कहानी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ	123
41	डॉ.विट्ठल शंकर नाईक	इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानियों में लोक संस्कृति	126
42	डॉ. संगीता ठाकुर	21 वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित मानव जीवन	133
43	डॉ. कल्पना पाटोळे	इककीसवी सदी के हिंदी उपन्यासों मे सामाजिक एंव सांस्कृतिक परिदृश्य	137
44	डॉ. सुनीता रावसाहेब हुन्नरगी	मनमोहन सहगल के उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य	140
45	डॉ. अशोक मोहन मरळे	21 वीं सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	145
46	श्री. मलगौडा पाटील	इक्कीसवी सदी के हिंदी काव्य में सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य	149
47	प्रा. मारूफ समशेर मुजावर	इक्कीसवी सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित किन्नर विमर्श	153
48	प्रा. डॉ. रगडे परसराम रामजी	इक्कीसवीं सदी की आम्बेड़करवादी हिंदी कविताओं में सामाजिक परिद्रश्य	157
49	डॉ.रमेश शिवाजी बोबडे	इक्कीसवीं सदी के हिंदी नाटकों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य. (सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के नाटको के संदर्भ में)	161
50	डॉ. अमोल तुकाराम पाटील	21 वीं सदी के उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक मूल्य	164
51	डॉ. माला कुमारी गुप्ता	कलि-कथा : वाया बाइपास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य	166
52	डॉ.सरोज पाटील	निर्मला पुतुल लिखित 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश	170
53	डॉ.प्रकाश आठवले	'संघर्ष' में चित्रित सामाजिक संघर्ष	174
54	प्रो. (डॉ.) विजय महादेव गाडे	वेश्या विमर्श की पहल – कोठा नं. 64	178
55	प्रा.सारिका राजाराम कांबळे	'ग्लोबल गांव के देवता' : सांस्कृतिक परिदृश्य	185

निर्मला पुतुल लिखित

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश

डॉ.सरोज पाटील
प्रोफेसर
श्री शहाजी छ. महाविद्यालय ,कोल्हापुर
Email-saroj120575@gmail.com

सारांश :-

निर्मला पुतुल अपनी कविताओं व्दारा एक निश्चित जनसमुदाय का चित्र प्रस्तुत करती है। यह संथाल जन समाज सामाजिक अंतर्विरोध दर्शानेवाला समाज है। जन संवेदना के परत खोलती प्रस्तुत कविता युवा स्त्री के अंतरंग को सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों के परिप्रेक्ष्य में खोलती है। प्रस्तुत कविता की बेटी की मांगे आधुनिक भी हैं वहीं संथाल आदिवासी समाज की असमान विशम व्यवस्था पर चोट करनेवाली भी है। समाज व्यवस्था के प्रति अपना निषेध दर्शाती यह मांगे आदिवासी स्त्री अस्मिता की खोज प्रतीत होती हे। सामाजिक विडंबनाओं को खोल कर रखनेवाली इस कविता व्दारा जनतंत्र का खोखलापन उजागर होता है। समाज की प्रचलित व्यवस्था पर कडा व्यंग्य करनेवाली इस बेटी की मांगे पाठकों को बडा भावूक बनाती है। प्रत्येक स्त्री पाठक प्रस्तुत कविता में चित्रित स्त्री की मांगों में अपने हृदय का प्रतिबिंब पा सकती है। इस अर्थ में कविता का आशय बडा समृध्द बना है। बेटी व्दारा अपने पिता से की जानेवाली मांगों की सूची बडी लंबी है।एक ओर यह मांगे स्त्री के भावविश्व को खोलती है वहीं दूसरी ओर अपने समाज की विषमता एवं असमानता को बहस का मुद्दा बनाने में सफल है, साथ में सांस्कृतिक परिवेश से एकाकार हुए आदिवासी समाज जीवन के अत्यंत संवेदनशील चित्रण इस कृति को अधिक मर्मस्पर्शी बनाते हैं। आदिवासी समाज की तमाम सामाजिक विसंगतियों एवं अंतर्विरोध पर एक एक कर कटाक्ष करते हुए व्यापक पटल पर कवयित्री की काव्य प्रतिभा प्रस्तुत हुई है। इसमें विद्रोह, सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन की तीव्र आकांशा एवं सांस्कृतिक परिवेश से एकाकार बने रहने की अतीव इच्छा बराबर के साझीदार है।

मूल शब्द *— ब्याह, वर, आदमी, आदिवासी, विलाप, हाट, आंगन*

प्रस्तावना :-

समाज भले ही मानव समूह से बनता हो परंतु वह केवल मानव समुह न होकर पारस्पारिक संबंधों का समन्वय होता है जिसकी अपनी संस्कृति होती है। अत: समाजजीवन एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के एकत्रीकरण में ही प्रत्येक समूदाय की अपनी अपनी स्वतंत्र पहचान बनती है ।

पृथ्वी के निर्माण के साथ ही आदिवासी समुदाय का अस्तित्व पाया गया है। सालों की परंपरा को साथ लिए आदिवासी समुदाय अपने भाव विश्व में सांसे लेता रहा है। विश्व के अनेक देशों की तरह भारत के अनेक क्षेत्रों के आदिवासी समुदाय के अनछुए पहलुओं से हम पूर्ण परिचित नहीं है।

कवयित्री निर्मला पुतुल संथाली आदिवासियों का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से सन 2005 में प्रकाशित कविता संग्रह 'नगाडे की तरह बजते शब्द' में संग्रहित कविता 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता आदिवासी समाज एवं सांस्कृतिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में आदिवासी स्त्री के भावविश्व का रेखांकन करती है। डॉ. बंसीधर मानते हैं कि, 'भारतीय गावों का या अंचलों का जीवन अविकसित और पिछडापन लिए हुए है। शहरी सभ्यता के प्रभावों से यह आज भी अछूता एवं दूर है। उसकी अपनी संस्कृति होती है। जीवनप्रणाली होती है । उसके अपने सुख दु:ख के कारण होते हैं। वहाँ की समस्याओं एवं सुविधाओं का एक अलग ही रूप होता है।' (पृ.७४ डॉ. बंसीधर - हिंदी के आंचलिक उपन्यास, सिद्धांत और समीक्षा)

प्रस्तुत कथन आदिवासी समाज एवं सांस्कृतिक जीवन को प्रस्तुत करता है। परंतु कालानुरुप इनमें सकारात्मक बदलाव अपेक्षित है।

निर्मला पुतुल व्दारा चित्रित प्रस्तुत आदिवासी संथाली समाज वर्तमान युग में भी पुराने रितिरिवाजों, परंपराओं में उलझा हुआ है। आजादी के लगभग 7 दशकों बाद भी यह आदिवासी जनसमुदाय समाज की मुख्य धारा में सक्रिय सहभागी नहीं हो पाया है यह देश की सबसे बडी विडंबना है।

पुतुल लिखित प्रस्तुत कविता संग्रह की 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता आदिवासी समाज के अंतरंग को बडी संवेदनशीलता से रेखांकित करती है। यह संथाल समाज मेहनत के बावजूद विषम आर्थिक स्थिति, अल्पलाभ के लिए बडे बडे समझौते, स्त्री जीवन की त्रासदी उसका भावविश्व, व्यसनों की आदी युवा पीढी, अनैतिकता आदि सामाजिक मुद्दों के साथ विशिष्ट रितिरिवाज, परंपराए, खान-पान, रहनसहन आदि सांस्कृतिक मुद्दों से युक्त है। इन पर चर्चा प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है।

विषम आर्थिक स्थीति –

कवयित्रि ने अपने समय और समाज को उसकी सारी विषम स्थितियों के साथ अनुभूत किया है। प्रस्तुत कविता की बेटी आदिवासी स्त्री के भावविश्व को खोलती है। यह बेटी अपने पिता की तंग आर्थिक स्थीती से भली प्रकार परिचित है। इसीकारण अपने पिता से बिनती कर रही हैं कि,

"मुझे इतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने खातिर
घर की बकरियां बेचनी पडे तुम्हें।" (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

बेटी से मिलने उसके ससुराल पहुंचने की तक हैसियत न रखनेवाले पिता की बेटी को खूब चिंता है। उसका मन इस बात से घबराता है कि बेटी से मिलने की अतीव इच्छा के चलते पिता को न जाने कितने पापड बेलने पडेंगे ? घर की न जाने कौन कौन सी चीजें बेचनी पडेगी ?

विशेषत: आदिवासी समुदाय की प्रमुख संपत्ति होती है घर की भेड बकरियां । इनके दम पर ही तो वे अपनी रोजी रोटी चलाती है। ऐसे में कभी कोई आर्थिक संकट आ जाए तब इनके सामने इन्हें बेचने के सीवा कोई विकल्प नहीं बचता । आधुनिकीकरण के इस दौर में यह स्थिति आजादी की विडंबना है। लगभग हर आदिवासी समुदाय आर्थिक दृष्टि से विवश है।

व्यासनाधीनता एवं अनैतिकता:-

वस्तुत: प्रकृति की गोद में पलने बढनेवाले आदिवासी उतने ही स्वच्छ शुध्द हो जितनी की प्रकृति यह अपेक्षित है। परंतु दुर्भाग्यवश शिक्षा, भविष्य के बारे में सतर्कता, परिपूर्ण मार्गदर्शन का अभाव आदि कारणों से अनेकों बार आदिवासी विशेषत: आदिवासी युवक गलत राहों का अवलंब करते हैं। सार्थक काम करने के बजाय नशे में धुत गलत राहों का अवलंब करते हैं। नशे की लत में अल्प लाभ के लिए घर की महिलाओं को बेचने तक हिचक महसूस नहीं करते । होठों, मेलों में से लडकियों को भगाकर ले जाना, उन्हें गुमराह करना जैसे अनैतिक व्यवहारों व्दारा अपने सहीत पूरे समाज पर लांछन लगा देते है। प्रस्तुत कविता में वर्णित बेटी अपने पिता से बिनती करती है कि,

मत चुनना ऐसा वर
जो पोचाई आदिवासियों की देशी शराब
जिसे चावल से बनाते हैं और हंडियों में
डुबा रहता हो अक्सर काहिल निकम्मा हो
माहिर हो मेले में से लडकियाँ उठा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी खातिर। (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

कवयित्री आदिवासी युवाओं की इन कृतियों पर बडी नाराज है। सालों पिछडेपन का कलंक अपने माथे पर लिए जीते आए आदिवासियों में सकारात्मक परिवर्तन आवश्यक है।

अल्पमात्रा में आदिवासियों में आया सुधार उन्हें देश और समाज की मुख्य धारा में ले आने के लिए सक्षम नहीं है। हर आदिवासी जिम्मेदारी से अपने व्यक्तित्व में सुधार ले आने के लिए प्रयत्नशील बने। यह कवयित्री की प्रामाणिक अपेक्षा है।

आदिवासी स्त्री जीवन - निर्मला जी अपनी कविताओं में समाज के जो ब्योरे प्रस्तुत करती है वह उस समाज के सामाजिक जीवन की समझ पैदा करने में सक्षम है। यह समाज सामाजिक अंतरविरोधक है जिसमें हर बार स्त्री के हिस्से दु:ख ही आता है। आदिवासी स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा सच यह है कि वह अपने ही घर में, अपने ही समाज में असुरक्षित है। पति के घर में सुरक्षितता का विश्वास उसे कभी भी प्राप्त नहीं हो पाया है। ऐसे में अक्सर उसे यह भय घेरा रहता है कि न जाने कब उसे कोई उठा ले जाए या उसका सौदा हो । उसका दु:ख दूर कर पाए ऐसा कोई उसके साथ नहीं है। अनेकों बार इन स्त्रियों के पति पैसा कमाने अपना इलाका छोड कोसों दूर कश्मीर, बंगाल, आसाम चले जाते हैं। उनके वापस लौटने की कोई निश्चित तिथि तय नहीं रहती और घर में अकेली बनी स्त्री अपने साये से भी डरने लगती है। असुरक्षा की भावना से लगभग हर आदिवासी स्त्री पीडित है। इसीलिए प्रस्तुत कविता की बेटी अपने बाबा से कहती है,

'जब चाहे चला जाए बंगाल, आसाम, कश्मीर
ऐसा वर नहीं चाहिए मुझे' (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

एक अपार भय उसे आठों प्रहर घेरा रहता है इसीलिए अपने बाबा से प्रस्तुत बिनती करनेवाली इस युवती की इच्छा है कि मारे दु:ख के यदि उसके आंसू उमड आए तो उन्हें पोंछने पिता अपनी बेटी के पास दौडे चले आए । बेटी बडी भावूक बनी अपने पिता से कह रही है,

"मैं कभी दु:ख में रोऊं इस घाट
तो उस घाट स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण विलाप" (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

बेटी को इतनी दूर नहीं ब्याहना है जहाँ पर रहते हुए वह और उसके पिता एक दूसरे के सुख दु:ख के भागीदार न बन पाएं । अपने पति के परदेस चले जाने पर वह क्या करेगी ? कितना दु:ख होगा उसे ? वह दु:ख कौन दूर करेगा ? इन प्रश्नों पर जब बेटी विचार करने लगती है तब उसे तीव्रता से लगने लगता है, उसके पिता बेटी की चिंता मिटाने दौडे चले आ पाए, इतना उसका मायका नजदीक हो । अपने पिता के सामने भावूक अर्जी रखनेवाली बेटी पूरे आदिवासी समाज की युवा लडकियों की मनोवस्था को खोल रही है।

इन स्त्रियों को अक्सर अपने मायके जाने का मौका नहीं मिलता, जिससे हमेशा मायकेवालों की, मायके के घर आंगण, गाय-बकरियों की यादें उसे सताती रहती है। अक्सर उनका मन करता है कि बाजार, हाट जाते समय कोई एकाद ऐसी व्यक्ति मिल जाए, मायके के पास रहनेवाली जो उन्हें मायके का हाल बता सकें । जिनके हाथों वे अपने बाबा के लिए खुद के हाथों से बनाए व्यंजन भेज सकें । बेटी अपना मन खोलते हुए कहती है,

"मेला हाट जाते जातें
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर गांव का हालचाल
चितकबरें गैया की ब्याने की खबर
दे सके जो कोई उधर से गुजरते" (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

प्रस्तुत बेटी की संवेदनशील इच्छा पूरे आदिवासी स्त्री के भावविश्व को खोलती है। इस स्त्री जीवन में चिंता है, भय, दु:ख वेदना है, अपनों के प्रति अतीव प्यार है। जिम्मेदारी की भावना है, कर्तव्यनिष्ठा है। बिछडने का गम है। मिलने की चाहत है। कवयित्री ने अत्यंत कोमलता से आदिवासी स्त्री विश्व को खोला है। जो सामाजिक प्रथाओं, सामाजिक व्यवस्था का शिकार बना है।

आपसी लडाई - झगडे

आपसी तनाव स्वस्थ समाजजीवन में सबसे बडी बाधा मानी जाती है। आदिवासी समाज अधिकांशत:इस समस्या से ग्रस्त पाया जाता है । शायद शिक्षा की कमी, आर्थिक अभाव, जीवन विषयक नविनतम दृष्टी कोनों से अनभिज्ञता, पारंपारिक अस्त्र-शस्त्रों की सहज उपलब्धता, व्यापक जनसमुदाय में उठने बैठने के आदी न होने के कारण शायद छोटी छोटी बातों पर लडाई झगडे पर उतर आना इनके जीवन का अंग बना हुआ है। कवयित्री इन स्थितियों को आदिवासी जीवन के विकास का सबसे बडा विघ्न मानती है। प्रस्तुत कविता की बेटी अपने पिता से बिनती करती है कि,

'जो बात बात में
बात करें लाठी डंडे की
निकाले तीर धनुष कुल्हाडी
ऐसा वर नहीं चाहिऐ मुझे' (कविता : उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)

बेटी सामंजस्यपूर्ण, व्यवहार वाले पती की मांग करती है। बेटी को ऐसा समतापूर्ण समाज अपेक्षित है जहाँ पर कोई लडाई झगडा न हो, तणाव न हो । जहाँ शेर और बकरी एक घाट का पानी पिये । अर्थात आपसी तणास रहीत आदिवासी समाज कवयित्री को अपेक्षित है। व्दव्द टकराहट आदि जटिल मुद्दों को काट कर कवयित्री उस बिंदू तक पहुंचना चाहती है जहाँ पर केवल आत्मिक सुख एवं समाधान व्याप्त हो क्योंकि वही मनुष्य जीवन की मूलभूत मांग है।

संथाल समाज की संस्कृति -

सांस्कृतिक विशेषताएं हर समुदाय की अपनी पहचान होती है। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में हर समुदाय शताब्दियों से अपनी पहचान, अपना अस्तित्व बनाए रखता आया है। आदिवासी जनसमुदाय खान पान, रहन सहन, वेशभूषा, परंपराए, रितरिवाज, धार्मिक मान्यताएं आदि से बंधा प्रकृति से सहचर्य जीवन जीता आया है। प्राकृतिक उपादानों पर एकाधिकार की भावना से वे खुद को विलग नहीं कर पाए है।

प्रस्तुत कविता की बेटी को ऐसे घर नहीं ब्याहना है जिस घर के पिछवाडे से पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे या मुर्गे की बांग पर सूरज न निकले कितनी एकाकार है वह प्रकृति से। उसे ऐसे वर से भी नहीं ब्याहना है जिसने कभी अपने हाथों से पेड नहीं लगाया है, प्रकृति की सेवा नहीं की है। धान नहीं उगाया है।

वैश्विकरण के इस दौर में भी प्रकृति से मित्रता, सहचर्य भावना इन्हें औरो से अलग बनाए रखती है । कदु कोहडा, खेखसाचठेल, बडी बैर, बीन्स आदि स्थानिय सब्जियों की चाहत, महुआ का लट या खजूर का गूड जैसे व्यंजनों का स्वाद उनके आनंद के क्षण हैं, जो इन्हें अपनी ही मस्ती में मस्त बना देते हैं । मद्य सेवन की धुंधी भी उनकी अपनी अलग पहचान बनाती है। चावल से बनाई जानेवाली पोचाई शराब युवाओं को गुमराह करती है फिर भी वे इसका सेवन करना नहीं छोडते । बासुंरी की धून, ढोल मांदर की थाप उनके फुरसत के पलों को सजाने का काम करते हैं और जब वीरता दिखाने का मौका आता है तब स्थानिय शस्त्र तीर, धनुष्य, कुल्हाडी इन्हें बडे आक्रमक बनाते है। हा कभी इन शस्त्रों का उपयोग आपसी बैर, कटूता, अविचार, क्रुरता को भी बढावा देते है तब सांस्कृतिक गरिमा को गहरा धक्का पहुंचता है। पर इन सब अंर्तविरोधों से बेखबर संथाल आदिवासी की अपनी जिंदगी है। उनके लिए मस्तमौला तो औरों की दृष्टी में जाहिल, अनपढ, गवार। कवयित्री शताब्दियों से चलते आए इस सांस्कृतिक परिवेश के विषम पक्ष में सकारात्मक बदलाव की अपेक्षार्थी है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत रचना आदिवासी स्त्री जीवन का दर्द अत्यंत संवेदनशीलता के साथ रेखांकित करती हैं। आदिवासी समाज की प्राकृतिक उपदानों से एकाकार भावना एवं सामाजिक विषमताओं में सकारात्मक परिवर्तन की मांग करती प्रस्तुत रचना आदिवासी क्षेत्र की मूल समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने में सफल बनी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

आधार ग्रंथ

1. नगाडे के तरह बजते शब्द – निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण २००५

संदर्भ ग्रंथ

1. मानव और संस्कृती – श्यामाचरण दुबे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९९३
2. ग्रामीण समाजशास्त्र - प्रो.रामपुरीया रामेश्वर लाल, दत्त बंधू प्रा.लि.अजमेर, प्रथम संस्करण १९६२
3. हिंदी के आंचलिक उपन्यास सामाजिक : सांस्कृतिक संदर्भ – लेखक डॉ. विमल शंकर नागर, प्रेरणा प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८५
4. हिंदी के आंचलिक उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा : डॉ.बंसीधर, रचना प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९७२